यद्यपि गोपियाँ श्रीकृष्ण के साथ बहस कर रही थी, लेकिन उनका मन दुःख से भर गया था। बात करते समय उनके नेत्रों में आँसू से भरे थे और वे लंबी लंबी सांसों की आह भर रही थी। दिल का दर्द चेहरे पर दिखाई दे रहा था। लगातार रोने के साथ आंखें लाल हो गईं थी।

उन्होंने अत्यंत भावुक होकर श्रीकृष्ण से कहा, "हम जानती है कि तुम केवल नंदनंदन नही हो बल्कि सबके हृदय में रहने वाले, सबके मन की बात जानने वाले सर्व शक्तिमान परमात्मा हो। आपके क्रूर शब्द हमारे दिल पर आघात करते है, आपका अंतःकरण बडा ही कोमल है। आपको ऐसे कठोर शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। हम आपको अपने जीवन से अधिक प्यार करती हैं। उसी प्यार के कारण सब रिश्ते नातों को छोड़कर हम आपके पास आयी है। आपका तो कानून है कि जो जीव जिस भाव से मुझे प्यार करता मैं भी उस भाव के अनुसार उतना ही प्यार उस जीव से करता हूँ। इसलिए हमारे साथ इस तरह क्रूरता पूर्वक व्यवहार करना आपको शोभा नही देता। हम जानती हैं कि आप अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करने के लिए स्वतंत्र हैं और आप पर किसी नियंत्रण नही हो सकता। हम ये भी मानती है कि हमारा आप पर कोई अधिकार नहीं है। लेकिन आप भक्तों की इच्छाओं को पूरा करते हैं, इसलिए इस प्रकार कठोरता पूर्वक हमारा त्याग मत करो। उदारता पूर्वक हमारा स्वीकार करो।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

आपकी प्यारी मुस्कान, आकर्षक आंखें, प्यारी नज़र, मनभावन मुरली की ध्वनी इन सब ने हमारे दिल में रास की इच्छा को उजागर किया है। कृपया हमें अपने लाल होठों का रस पिला कर । यदि आप हमें अस्वीकार करते हैं, तो हम निश्चित रूप से आपके अलगाव की जलती हुई आग से मर जाएंगे। आपने हमें अपनी सेवा के इस संतुष्टिदायक अनुभव का वरदान दिया था। इस रास का रस देवी लक्ष्मी भी उपलब्ध नहीं है जो आपकी

शाश्वत पत्नी है। अब जब वो रास का अवसर आ गया है, तो आप हमें दुःख और निराशा के महासागर में डुबो रहे हो। आपका सुंदर चेहरे पर आकर्षक बाल की घुंगराली लट लहरा रही हैं, जिसने हमारे मन को मंत्रमुग्ध कर लिया है। लाल होंठ, असीम सुंदरता और आकर्षक मुस्कुराहट देखकर, कौन है जो आपको प्यार नही करेगा? पूरे ब्रह्मांड में ऐसी कोई स्त्री नहीं है जो आपके दिव्य चिन्मय, सुन्दर, मोहक और आकर्षक रूप को देखकर हर रिश्ता, हर प्रतिबंध, हर धार्मिक और सामाजिक मर्यादा पर लात ना मार दे। यह आपका सिद्धांत है कि आपकी शरण में आनेवाले का आप भजन करते है। आप उसे अपना लेते है। इसलिए कृपया हमें भी स्वीकार करें जिन्होंने आपके कमल चरणों की शरण ली है।"

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

श्रीकृष्ण मुस्कुराये। मतलब ये कि मैं तो परीक्षा ले रहा था कि गोपियों को मेरे अलावा स्वर्ग आदि की कामना तो नही? लेकिन गोपियों का प्रेम परम निष्काम था। वैसे तो श्रीकृष्ण की भी गोपियों के साथ रास करने की इच्छा हो रही थी। सारा संसार श्रीकृष्ण के अधीन रहता है और श्रीकृष्ण दिव्य प्रेम के अधीन रहते है, जो गोपियों के पास था। उसी प्रेम कारण ही तो आत्माराम श्रीकृष्ण गोपीराम बन गया।